

भारतीय राजनैतिक व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों की प्रासंगिकता

डॉ. ऊषा त्रिपाठी

शोध-सार

प्रध्यापक : राजनीतिशास्त्र

शासकीय अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद
स्नातकोत्तर महाविद्यालय निवाड़ी (म. प्र.)

प्रणय श्रीवास्तव

विषय - राजनीतिशास्त्र

महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड
विश्वविद्यालय छतरपुर (म. प्र.)

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में दलीय व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसका सम्बन्ध राज्य एवं राष्ट्र की स्वायत्तता निर्वाचन पद्धति में दलीय स्वरूप का एक प्रारूप है, जिसके आधार पर सभी राजनीतिक दलों के घोषणापत्र एवं सैद्धान्तिक विचारधाराएं एवं उनकी शक्तियाँ तथा न्यायाधिक सक्रियता अलग-अलग है। दलीय व्यवस्था का सम्बन्ध समूह की विशेषताओं, समाजवाद, लोकतन्त्रवाद, सम्यवाद एवं राष्ट्रवाद के विभिन्न आयामों पर केन्द्रित है।

भारत में दलीय व्यवस्था का स्वरूप समय-समय पर बदलता रहा है उसका कारण विभिन्न शक्तिशाली नेतृत्व केंद्र एवं राज्य के विवाद राज्य स्तरीय दलों का औचित्य एवं विभिन्न दलों की जो राजनीति की प्रकृति में नये सैद्धान्तिक आधार पृष्ठभूमि एवं कार्य प्रणाली की व्यवस्थित करती है।

Paper Received date

05/06/2025

Paper date Publishing Date

10/06/2025

DOI<https://doi.org/10.5281/zenodo.15865745>

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत वर्तमान में 06 राष्ट्रीय दल है, जो इस प्रकार है।

1. भाजपा, 2. कांग्रेस, 3. बसपा, 4. आम आदमी पार्टी, 5. नेशनल पीपुल्स पार्टी, 6. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)

इसके साथ ही 56 से अधिक मान्यता प्राप्त राज्य सभी दल और 2796 गैर मान्यता प्राप्त दल है। भारतीय लोकतंत्र में 543 लोकसभा सीटें (निर्वाचित) और 233 राज्य सभा की निर्वाचित सीटें हैं।

मुख्य बिन्दु :- सैद्धान्तिक, सक्रियता, लोकतन्त्रवाद, सम्यवाद, औचित्य

IMPACT FACTOR**5.924**

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में राष्ट्रीय राजनीति दलों की केन्द्र एवं राज्यों की सरकारों के निर्माण में लोकतन्त्र को सबल एवं दुर्बल बनाती है।

भारत में लोकतन्त्र राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का निर्माण करती है सभी लोगों का लोकतन्त्र में समान महत्व है। सभी मनुष्यों के आधार समान है। लोकतन्त्र समाज एवं राष्ट्र को उन्नत करने का प्रयत्न करता है। जिसमें व्यक्ति भी उन्नत होता होता है। लोकतन्त्र को शासन चलाने की केवल एक पद्धति मात्र नहीं है। बल्कि यह एक विकासशील जीवन यापन विकासशील दर्शन है। साथ ही यह जीवन यापन की एक गतिशील पद्धति भी है। लोकतन्त्र केवल अधिकारों पर ही जीवित नहीं रहता है बल्कि उसका मूल कर्तव्य लोकतन्त्र की मर्यादा को विकसित करता है।

भारतीय लोकतन्त्र के आयाम न्याय स्वतन्त्रताए समानता और बन्धुत्व लोकतन्त्र के आदर्श है। किन्तु स्वतन्त्रता तथा समानता तब तक कायम नहीं जब तक व्यक्ति अपने सवोत्तम समाज को देने की संकल्पना नहीं करता है।

इसके अतिरिक्त लोकतन्त्र की विचारधारा एक संवैधानिक दृष्ट्य पर आधारित हो ।

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में राजनीतिक दलों की चुनाव में मुख्य विशेषता यह है कि व्यक्ति स्वतन्त्रता और विचार स्वतन्त्रता के वातावरण में सम्पन्न होते हैं। चुनाव प्रक्रिया का सार इस बात पर जोर देता है कि अन्ततः आम मतदाता ही स्वामी हैं। क्या वयस्क भारतीय नागरिक को केवल मतदान करने या प्रतिनिधि ही अधिकार नहीं बल्कि उसे यह अधिकार है वह कोई भी पद प्राप्त कर सकता है। चुनावों में जिन उम्मीदवारों को जनता का विश्वास प्राप्त हो जाता है वे विजयी होते हैं। लोकसभा में जिस दल का बहुमत होता है उसका नेता प्रधानमंत्री बनता है। इस प्रकार अपनी पसन्द के प्रधानमंत्री के जरिये हम अपने ऊपर स्वयं राज करते हैं । (1)

भारतीय लोकतंत्र में चुनाव की प्रक्रिया दलीय व्यवस्था पर आधारित है जिसमें प्रमुख रूप से भारतीय नागरिकों का विशिष्ट योगदान है जो मतदान के माध्यम से राजनीतिक आग्रहों को प्रतिबिम्बित करता है जिसमें बहुत से राजनीतिक दल अपनी शक्ति स्थापित करते हैं जिसमें से नागरिक मौलिक समन्वय रहता है दलीय व्यवस्था और लोकतन्त्र एक दूसरे के पूरक हैं या पर्याय हैं जिसके माध्यम से राष्ट्र में राजनीतिक स्थिरता को स्थापित किया जाता है । (2)

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में राजनीतिक दल किसी राजनीतिक समुदाय को सामूहिक निर्णय कैसे लेना चाहिए, दूसरे शब्दों में किसे शासन करना चाहिए, सरकार बनाने के सम्बन्ध में किस सिद्धान्त को मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करना चाहिए और इसके लिए किस तरह की संस्थात्मक व्यवस्था की आवश्यकता होती है। इस प्रश्न का अब एक सार्वभौमिक जबाब है। अब इसका महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि अब सैनिक शासन या तानाशाह या राजतन्त्रवादी हर कोई लोकतांत्रिक होने का दावा कर रहा है अब लोकतान्त्रिक होने के आरोप बहुत गंभीरता से किया जाता है । (3)

बहरहाल हाल के इतिहास में ही लोकतन्त्र को यह सकारात्मक महत्व दिया गया बहुत लम्बे समय तक इसे भीड़ का शासन अक्षम सरकारों पर्याय माना जाता था । लोकतन्त्र शब्द का अर्थ होता है लोगो का शासन ये लोग कौन हैं और ये किस तरह शासन करते हैं ? ये किन मुद्दों पर शासन करते हैं। किस सीमा तक शासन करते हैं ? किन संस्थाओं द्वारा शासन करते हैं । किन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शासन करते हैं ? क्या यह एक इच्छित या मनचाही व्यवस्था है । (4)

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिमान वैचारिक दृष्टि से व्यवहारिक एवं प्रजातान्त्रिक हैं। समय के बदलते परिवेश में लोकतन्त्र वर्चस्व एवं प्रभुता समय-समय पर परिवर्तित होती रही जिसमें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लोकतन्त्र की सहभागिता को उत्कृष्ट माना है। राजनीतिक शक्ति का वर्चस्व स्थापित होने में लोकतन्त्रात्मक प्रणाली का बहुमुल्य योगदान रहा है। राष्ट्र और राज्य को व्यवहारिक एवं सशक्त बनाने में लोकतन्त्रात्मक प्रत्यक्षीकरण की बहुलता का चिन्तनीय विषय रहा है जिसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की सतर्कता लोकतन्त्रात्मक विचारधारा पर सन्दर्भित रहती है। जिसमें मानवीय मूल्यों की परकाष्ठा दिन-प्रतिदिन प्रगतिशील प्रतिमानों एवं आग्रहों पर समीक्षात्मक व्यवहारिकता प्रदान करती है ।

भारतीय लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों का विश्लेषण करते हुए गुणात्मक गतिविधियों का वर्चस्व रहा है जिसमें राजनीति के विभिन्न परिदृश्यों का समग्र रूप पाया जाता है। लोकतन्त्र में अनेक प्रकार के राजनीतिक और नागरिक स्वतन्त्रताओं की मुख्य भूमिका रहती है। समाज में केन्द्र एवं राज्य सरकार की गतिविधियों का मूल्यांकन और आलोचना होती रहती है। इसका सत्ताधारी लोगों पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में राजनीतिक दलों की भूमिका का विश्लेषण करते हुए इसे चमत्कार की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि देश में व्यापक असमानता गरीबी और बेरोजगारी होने के बावजूद लोकतन्त्र और राजनीतिक दल कायम रहे लेकिन अमूमन भारत के विकास की धीमी गति के लिए लेकिन लोकतन्त्र को जिम्मेदार ठहराया जाता है। कई वार लोग देश को आर्थिक विकास की ओर ले जाने के लिए मजबूत शक्तिशाली नेतृत्व और यहां तानाशाही शासन तक की तरफदारी करने लगती है। लोकतन्त्र को विलासता के रूप में देखा जाता है।

अमर्त्य सेन तर्क देते हैं कि गरीब समाज में विकास को बढ़ावा देने में लोकतन्त्र की यान्त्रिक और सृजनात्मक दोनों की भूमिका है। लोकतन्त्र में शासको कोए मतदाताओं का सामना करना होता है। लोकतन्त्र में राजनीतिक आजादी नागरिक अधिकार स्वतन्त्र प्रेस और स्वतन्त्र न्यायपालिका तथा विपक्षमौजूद रहते हैं। इसके कारण समाज में सरकार की गतिविधिया का मूल्यांकन और आलोचना होती रहती है। इस तरह लोकतन्त्र लोगों की आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। लोकतन्त्र तथा राजनीतिक दलों से लोगो के लिए नये अवसर उत्पन्न होते हैं।

भारत में लोकतन्त्र के विकास के विभिन्न प्रतिमान केन्द्र एवं राज्य की सरकारों का आपस में समन्वय रहता है। जिस कारण से लोकतन्त्र में बहुत आधारभूत परिवर्तन हो रहे हैं। जिससे प्रत्यक्ष अपत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से राज्य सरकारों की कार्यप्रणाली प्रभावित होती है।

शोधार्थी के शोध का विषय भारतीय लोकतन्त्र के विकास में राजनीतिक दलों की भूमिका, मध्यप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में वर्तमान समय में म०प्र० में लोकतन्त्र के विकास में राजनीतिक दलों के प्रतिमान गरिमामयी है। जिस कारण से राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की लोकतन्त्रात्मक प्ररूपों में समानता एवं समरूपता का पृष्ठात्मक स्वरूप आलौकिक होता है।

मध्य प्रदेश के लोकतांत्रिक विकास के अन्तर्गत लोकसभा की 28 सीटें राज्यसभा की 11 सीटें विधानसभा की 230 सीटें हैं। वर्तमान में मध्य प्रदेश में विधान परिषद् अस्तित्व में नहीं है। यहाँ का विधान मण्डल एक सदनीय है जो विधानसभा है।

मध्य प्रदेश की दलीय व्यवस्था में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों का प्रतिनिधित्व और सहभागताए राजनीतिक विचारधारा को प्रभावित करती है जिसमें समाज और राष्ट्र सामाजिकता के मूल्य चुनौतीमयी बन जाते हैं। जिसमें बहुत से लोकतन्त्र के विकास के विषम परिस्थिति के अनुसार शून्य से शिखर तक अपनी गरिमा के अनुसार प्रभावकारी बन जाते हैं। जिससे प्रशासनिक व्यवस्थाए का विस्तारीकरण होता है इसके अतिरिक्त आमजन दलीय व्यवस्था से परिचत होफर विविध आयामों से जुड़ जाता है जो समाज एवं राष्ट्र के लिए के लोकत्व एवं शासनत्व के अनुकूल मनुष्य के विकास की अवधारणाएं अपने अंगो एवं उपांगों द्वारा विस्तृत होती है।

सैमुअल पी० हटिंग्टन ने भारत में लोकतन्त्रीकरण के विकास के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये। जिसका सम्बन्ध लोकतन्त्र की विचारधाराओं से है। अपनी पुस्तक थर्ड वेव डेमोक्रेटाइजेशन इन द लेट ट्वेंटीय सेन्चुरी 1991 में किया।

सैमुअल पी० हटिंग्टन ने लोकतन्त्र को अधिक से अधिक व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया। जिससे समाज में बड़ा बदलाव आया लोकतन्त्र हमेशा औचित्य एवं राजनीतिक अनौचित्य रूप व्यवस्था को प्रभावित करता है। परन्तु उसका सम्बन्ध लोकतन्त्र के विभिन्न आयामों से है।

यूरोप के विभिन्न राजनीतिक दार्शनिकोए चिंतको मीमान्सकों ने राजनीतिक दलों का अध्ययन किया जिसका सम्बन्ध सांस्कृतिक एवं प्रसांगिक वातावरण को व्यावहारिक एवं अनुसांगिक बनाना है। जिसके सम्बन्ध में यूरोप के कई विद्वानों ने अपनी धारणाएं दी हैं।

भारतीय लोकतन्त्र के विकास में पंचायतीय व्यवस्था की अहम् भूमिका है। बलवन्त राय मेहता समिति ने चायतीय राज व्यवस्था को अधिक सशक्त एवं व्यवहारिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1986 ई० में राजीव गाँधी सरकार में लोकतन्त्र के विकास और राजनीतिक दलों के लिए पंचायती राज संस्थाओं के पुनरुद्धार के लिए एल०एम० सिंघवी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

समिति ने सिफारिश कीए कि पंचायती राज संस्थाओं कोए संवैधानिक मान्यता देने और उनके संरक्षण की आवश्यकता है। जिससे भारतीय लोकतन्त्र के विकास को सुदृढ़ आधार प्रदान होगा। गांवों के समूह के लिए न्याय पंचायतों की स्थापना की जाए ।

किसी भी राज्य की संवैधानिक व्यवस्था का निर्धारण उस राज्य विशेष में विद्यमान दल प्रणाली से होता है। संघात्मक राजनीतिक व्यवस्था में विद्यमान दल प्रणाली की सामर्थ्य प्रादेशिक राजनीतिक नेतृत्व की महत्ता राजनीतिक दलों की शक्ति संरचना प्रादेशिक दलों को तुलनात्मक राजनीति को शक्ति संरचना तुलनात्मक शक्ति का व्यवहारिक क्रियान्वन को प्रभ करते हैए जिससे राज्य में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन आते है ।

संघात्मक शासन प्रणाली में विद्यमान पृथक.पृथक प्रदेशों या क्षेत्रों के कारण राजनीतिक दलों का निर्माण विकास में आसानी होती है। संघात्मक प्रदेशों के आकार संख्या एकता और विविधता से दलीय राजनीति और लोकतन्त्र प्रभावित होती है। यदि किसी संघ के प्रदेशों का आकार विशाल हो संख्या कम हो तो लोकतन्त्र में क्षेत्रीय दलों. सम्भावना अधिक रहती है। संघ के घटक प्रदेश में एकता पायी जाती हैए लोकतंत्र में सुदृढ़ और संगठित क्षेत्रीय दल के विकास की सम्भावना वढ़ जाती है।

संदर्भ सूची

- 1 दैनिक जागरणए सम्पादकीय पृष्ठ 10 मई 2019.
- 2 जैन पुखराजए फाड़िया बीण एलण साहित्य भवन प्रकाशन आगराए संस्करण 2008.
- 3 भार्गव राजीव आचार्य अशोक राजनीतिक सिद्धान्त पिर्यसन प्रकाशन संस्करण . 2011 पृ 111-112.
- 4 कुमार जेण त्रिपाठीए मध्य प्रदेश एक व्यापक अध्ययनए वाणी प्रकाशन इलाहाबादए संस्करण 2020.
- 5 जैन पुखराज फड़ियाए साहित्य भवन प्रकाशन आगराए संस्करण 2008, पृ 184.